राष्ट्रवाद के उदय के कारण

किसी भौगोलिक सीमा के अंदर रहने वाले लोगों या समुदायों के बीच सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवम् सांस्कृतिक कारणों के आधार पर जो एकता की भावना जन्म लेती है, उसी को राष्ट्रवाद कहते हैं।

भारत में आधुनिक राष्ट्रवाद का उदय एवम् विकास किसी एक विशेष कारण से उत्पन्न न होकर ब्रिटिश उपनिवेशवादी नीतियों से व्युत्पन्न विभिन्न कारकों एवं परिस्थितियों का परिणाम था।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध असंतोष

IAS pcs factory

- ब्रिटिश शासन का विदेशी चरित्र ने राष्ट्रवादी प्रक्रिया को जन्म दिया
- भारत में राष्ट्रवाद ब्रिटिश औपनिवेशिक हितों और भारतीय जनता के हितों के बीच टकराव से पैदा हुआ
- किसान, शिल्पी, मजदूर वर्ग, शिक्षित मध्यम वर्ग एवम् पूंजीपति वर्ग सभी अंग्रेजी नीतियों से दुष्प्रभावित थे।

भारत का राजनीतिक एकीकरण

IAS pcs factory

- अंग्रेजो ने समूचे भारत पर अपना शासन स्थापित कर इसे एक राजनीतिक एवम् प्रशासनिक सूत्र में बाँध दिया।
- भारत में एक समान प्रशासनिक सेवा, कानून व्यवस्था, यातायात, संचार के साधन, जैसे रेलवे, सड़कों, पुलों का निर्माण किया

राष्ट्रीयता की आर्थिक पृष्ठभूमि

- ब्रिटिश शासन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था मे ढाल दिया. देशी उद्योग धंधों का विनाश, धन के निष्कासन, मूल्यवृद्धि, अकाल, महामारी आदि के कारण किसान, मजदूर, जनता सभी बेहाल थे
- राष्ट्रवादियों द्वारा ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की मीमांसा से भी राष्ट्रवाद के विकास को प्रोत्साहन मिला
- दादा भाई नौरोजी, R.C. दत जैसे विचारकों ने धन निष्कासन का सिद्धांत का प्रतिपादन कर ब्रिटिश शोषण की प्रक्रिया को उजागर किया।

अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार

IAS pcs factory

- पाश्चात्य राजनीतिक तत्वों यथा - स्वतंत्रता, समानता, प्रतिनिधित्व आदि का महत्व भारतीय समझने लगे
- पाश्चात्य राजनीतिक घटनाओं जैसे अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम, फ्रांसीसी क्रांति, इटली, स्पेन, यूनान की क्रांतियों एवं इनके राजनीतिक महत्व को समझने मे अंग्रेजी शिक्षा ने पर्याप्त सहायता की।
- इसी प्रकार रूसो, पेन, वाल्टेयर, मेजिनी, गैरिबाल्डी सदृश्य विद्वानों के दर्शनों एवम् क्रांतिकारी कार्यों से भारतीय प्रभावित हुए

भारत में मध्य-वर्ग का विकास

IAS PCS Factory

Scanned with OKEN Scanner

साहित्य एवं समाचारपत्रों का योगदान

- पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन एवं भारतीय भाषाओं मे लिखे गए साहित्य ने भारत में देशभक्ति की भावना जागृत की।
- प्रमुख समाचार पत्र थे - अमृत बाजार पत्रिका, मराठा, केसरी, इंडियन मिरर, बंगाली, हिन्दू गोपकार आदि।
- राष्ट्रवादी लेखकों द्वारा विभिन्न भाषाओं में राष्ट्रीय चेतना के जागरण का प्रयास किया गया। —
  - * भारतेंदु हरिश्चंद्र - हिन्दी भाषा
  - * लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ - असमी साहित्य
  - * बंकिम चंद्र चटर्जी - बांग्ला भाषा
  - * अल्ताफ हुसैन - उर्दू भाषा

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों का प्रभाव

IAS pcs factory

- भारतीय धर्म एवम् संस्कृति को श्रेष्ठ बताया।
- भारतीयों मे मौजूद हीनता की भावना को दूर किया
- भारतीयों में आत्मसम्मान, आत्मबल पैदा किया
- दयानंद सरस्वती ने स्वदेशी एवं स्वराज की भावना को जगाया

प्रजातीय विभेद की नीति

- भारतीयों से नस्लभेद
- यूरोपीय क्लब तथा प्रथमश्रेणी के डब्बे मे रेल यात्रा पर रोक
- अंग्रेजों के खिलाफ मुकदमें की सुनवाई सिर्फ अंगरेज न्यायाधीश ही कर सकता था
- भारतीयों को सुबेदार से उपर का पद नहीं दिया जाता था.

IAS pcs factory

लिटन की प्रतिक्रियावादी नीति

- लिटन ने अपने कार्यो से भारतीयों को अपमानित एवं क्रुद्ध कर दिया।

कार्य:
- ब्रिटेन से आयातित कपड़ों से शुल्क हटा दिया
- 2nd अफगान युद्ध का खर्च भारतीय राजस्व से हटा लिया
- वर्नाकुलर प्रेस एक्ट
- शस्त्र अधिनियम द्वारा भारतीयों के साथ भेदभाव
- सिविल सेवा परीक्षा में सम्मिलित होने की आयु घटाकर 19 वर्ष कर दिया
- अकाल (1877) के दौरान दिल्ली दरबार का आयोजन

IAS PCS factory

Scanned with OKEN Scanner

रिपन के समय इल्बर्ट बिल विवाद एवम् श्वेत विद्रोह

- इल्बर्ट बिल विवाद ने भारतीय जनमानस में राष्ट्रवादी भावनाओं को जागृत किया

राजनीतिक संस्थाओं का योगदान

IASPCS factory

- लैण्ड होल्डर्स सोसाइटी, ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन, बाम्बे एसोसिएशन आदि संस्थाओं ने सुविधाओं एवम् राजनीतिक अधिकारों के प्राप्ति के लिए सरकार पर दबाव डाला।
- फलतः एक व्यापक संगठन बनाकर सरकार पर दबाव डालने का विचार पनपा। इसकी पूर्ण अभिव्यक्ति भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में हुई।

IAS PCS factory

Scanned with OKEN Scanner